

## हिंदी भाषा सीखने वाले विदेशी विद्यार्थियों पर भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव का विश्लेषण

डॉ. दीपामणि बरुवा

परियोजना निदेशक

ICSSR लघु शोध परियोजना

सह-प्रोफेसर (भाषाविज्ञान) कें. हिं. सं., आगरा

डॉ. अभिजीत प्रसाद

शोध सहायक

ICSSR लघु शोध परियोजना

कें. हिं. सं., आगरा

### सारांश

भारत के कई संस्थानों में विदेशी विद्यार्थी हिंदी सीखने के लिए आते हैं और संचालित पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेकर हिंदी सीखते हैं। बहुत विदेशी विद्यार्थी भाषा के रूप में हिंदी का सामान्य (General) ज्ञान रखने के उपरांत ही भारत में हिंदी सीखने के लिए आते हैं जो भाषा कौशल के चार स्तरों- सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना पर अलग-अलग रहता है। इसमें भी मुख्य के रूप में कार्य करने वाले दो स्तर सुनना और बोलना का ज्ञान बुनियादी रूप में रखते हैं लेकिन नियम या व्याकरण के स्तर पर उन्हें कुछ खास ज्ञान नहीं रहता है। जब वे भारत में आते हैं तो उनका संपर्क भारतीय भाषा-भाषी समुदाय से होता है और उस स्थिति में विदेशी अध्येता को औपचारिक मानक हिंदी से संपर्क नहीं होता है बल्कि विद्यार्थियों को प्रायः मानक हिंदी के अतिरिक्त भारत की विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों के मिश्रित स्वरूप वाली हिंदी से सामना होता है यह चाहे शिक्षक के रूप में हो या समाज, बाजार आदि के रूप में। जब हिंदी भाषी किसी दूसरी भाषा या अन्य क्षेत्रीय बोलियों वाले प्रदेश का होता है तो उसकी हिंदी पर उसका प्रभाव रहता है अर्थात् उसकी हिंदी में शब्दों के उच्चारण, शब्द-रूप, शब्दावली विविधता और ध्वन्यात्मक स्तर पर प्रभाव रहता है जो विदेशी विद्यार्थी के लिए सुनने और समझने के स्तर पर एक कठिनाई पैदा करता है। इसे ही आधार बनाकर 'हिंदी भाषा सीखने वाले विदेशी विद्यार्थियों पर भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव का विश्लेषण' विषय पर इस शोध-पत्र का लेखन कार्य किया गया है।

यह पत्र भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR), नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में संचालित लघु शोध परियोजना से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। इस शोध कार्य हेतु मात्रात्मक पद्धति की सहायता ली गई है जिसमें संकलित डेटा का विश्लेषण भारत की अन्य भाषाओं या बोलियों के प्रभाव के कारण विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी भाषा में आने वाली कठिनाइयों के रूप में किया गया है। इसमें मुख्य रूप से भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के रूप में भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी और राजस्थानी भाषाएँ प्राप्त हुई हैं जिनके बारे में इस शोध-पत्र में चर्चा की गई है। इस पत्र में विदेशी विद्यार्थियों को आने वाली समस्या या कठिनाइयों को दूर करने या कम करने का कोई उपाय या पद्धति नहीं दी गई बल्कि केवल इस प्रकार के मिलने वाले स्वरूप का डेटा आधारित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

**बीजशब्द (keywords):** भाषा अर्जन, विदेशी विद्यार्थी, क्षेत्रीय बोलियाँ, मानक हिंदी, ध्वन्यात्मक प्रभाव, शब्दावली विविधता।

**1. परिचय-** भाषा सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को भाषा शिक्षण कहते हैं। किसी भी भाषा को सीखने से आशय होता है कि उस भाषा में अपने-आप को अभिव्यक्ति कर पाना। संक्षेप में कह सकते हैं कि किसी भाषा का औपचारिक रूप से किया जाने वाला शिक्षण 'भाषा शिक्षण' है। भाषा शिक्षण मुख्य रूप से तीन रूपों में कराया जाता है- 1. मातृभाषा शिक्षण/प्रथम भाषा शिक्षण 2. द्वितीय भाषा शिक्षण 3. विदेशी भाषा शिक्षण। द्वितीय या विदेशी भाषा शिक्षण के दौरान सहज और सरल तरीके से दो रूपों में कराया जा सकता है इसमें पहला औपचारिक तरीका

है जिसमें शिक्षक के माध्यम से उपयुक्त सामग्री की सहायता से भाषा सीखता है। वर्तमान में सहायक सामग्री के रूप में तकनीकी उपकरण, टूल्स, ऐप्स तथा ऑनलाइन उपलब्ध ऑडियो-वीडियो एवं लिखित पाठ हैं जिनके उपयोग से सीखने की समय सीमा को कम किया जा सकता है लेकिन इन सभी की उपलब्धता होने के बावजूद बिना शिक्षक के किसी भाषा को व्यवस्थित रूप से नहीं सीखा जा सकता है। दूसरा है अनौपचारिक तरीका जिसमें किसी भाषा को सीखने के लिए उसी भाषा समाज में जाकर रहना और सुनने-बोलने की प्रक्रिया के माध्यम से सीखना है लेकिन इसमें समय बहुत अधिक लगेगा। भाषाओं की सिखाने के लिए भारत में कई संस्थानों में भाषा शिक्षण हेतु विभाग स्थापित किए गए हैं जहाँ निर्धारित कोर्स के माध्यम से भाषाओं को सिखाने की प्रक्रिया संचालित है।

हिंदी भाषा के संदर्भ में भी यह स्थिति देखने को मिलती है कि द्वितीय या विदेशी भाषा के रूप में हिंदी को सिखाने के लिए भारत के कुछ प्रमुख संस्थानों में पाठ्यक्रम संचालित हैं जहाँ गैर-हिंदी भाषी एवं विदेशी विद्यार्थी हिंदी सीखने के लिए आते हैं। हिंदी भाषा अर्जन के दौरान उन्हें आने वाली कठिनाइयों में से एक सबसे बड़ी कठिनाई हिंदी भाषा पर अन्य भारतीय बोलियों/भाषाओं के प्रभाव की आती है। भारत में हिंदी भाषी समाज द्वारा किसी मानक हिंदी का प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि उनकी भाषा में अन्य भाषाओं या बोलियों का प्रभाव रहता है जिसे समझना गैर-हिंदी भाषी या विदेशी विद्यार्थी के लिए बहुत मुश्किल हो जाता है। यह परेशानी तब और बढ़ जाती है जब किसी शिक्षक भी भाषा पर अन्य बोलियों या भाषाओं का प्रभाव रहता है। चूंकि शिक्षक इस बात बहुत अधिक ध्यान देते हैं कि इस तरह का कोई प्रभाव उसकी भाषा में ना रहे लेकिन यह कारण स्वाभाविक होने से कहीं-न-कहीं भाषा में रह ही जाता है। इस तरह से गैर-हिंदी भाषी या विदेशी विद्यार्थी के लिए किसी अन्य भारतीय भाषाओं की हस्तक्षेप वाली हिंदी को समझने में मुश्किल की स्थिति बन जाती है।

इस शोध पत्र में विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी भाषा सीखते समय किन-किन अन्य भारतीय बोलियों/भाषाओं के प्रभाव के कारण मुश्किलों का सामना करना पड़ता है उसका डेटा आधारित विश्लेषण कर प्राप्त परिणामों की चर्चा की गई है जिसे विदेशी विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त डेटा के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इसके माध्यम से यह जाना जा सकता है कि विदेशी भाषा के रूप में हिंदी सीख रहे विदेशी विद्यार्थियों को किन भाषाओं की हस्तक्षेप वाली हिंदी को समझने में अधिक मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। आगे विदेशी विद्यार्थियों से प्राप्त डेटा के आधार पर इसके स्वरूप और विश्लेषण प्रस्तुत है।

**2. शोध के उद्देश्य-** प्रस्तुत शोध-पत्र में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी सीखने वाले विदेशी विद्यार्थियों पर भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव को लेकर सर्वेक्षण किया गया है। इस शोध-पत्र में हिंदी भाषा अर्जन के दौरान भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के कारण विद्यार्थियों

को हिंदी भाषा समझने में आने वाली कठिनाइयों को केंद्र में रखते हुए विश्लेषण किया गया है। इसके माध्यम से विदेशी विद्यार्थियों की दृष्टि से हिंदी भाषा अर्जन में बाधा बनने वाली भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को जाना जा सकता है या उनके दृष्टि के किन-किन भाषाओं से मिश्रित हिंदी को समझने में अधिक मुश्किलों का सामना करना पड़ता है उसे समझा जा सकता है। इसके अलावा हिंदी भाषा सीखने वाले अध्यापकों की दृष्टि से यह इस प्रकार उपयोगी हो सकता है कि हिंदी पर अन्य भारतीय भाषाओं के हिंदी मिश्रित स्वरूप का ध्यान देते हुए विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी सिखाएँ जिससे उन्हें कम-से-कम समस्याओं का सामना करना पड़े।

**3. शोध प्रविधि-** प्रस्तुत शोध मात्रात्मक शोध प्रविधि पर आधारित है। इस शोध में पूर्णतः प्राथमिक डेटा (Primary data) का प्रयोग किया गया है। एकत्रित डेटा से परिणाम की व्याख्या हेतु विश्लेषणात्मक प्रविधि (Descriptive Method) की सहायता ली गई है जिसके अंतर्गत आवृत्ति वितरण आधारित सांख्यिकीय विधि से प्राप्त परिणामों को प्रस्तुत किया गया है। डेटा संकलन हेतु क्षेत्र अध्ययन (field study) प्रक्रिया को अपनाया गया है और क्षेत्र अन्वेषक (field investigator) द्वारा डेटा संकलित किया गया है। प्रश्नावली के आधार पर डेटा को संकलित किया गया है जिसमें छह प्रमुख प्रश्नों से वस्तुनिष्ठ (objective) और बहु-चयनित (Multiple-select) प्रकार के प्रश्नों को अंग्रेजी में दिया गया था।

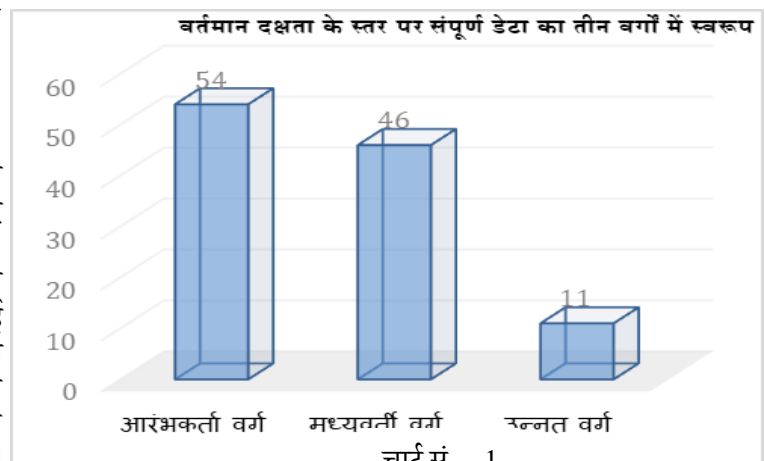
**4. संकलित डेटा का विवरण-** डेटा संकलन के लिए कुछ प्रमुख संस्थानों को लिया गया है। इसमें हिंदी सीखने के लिए भारत आए कुल 111 विदेशी विद्यार्थियों द्वारा सहभागिता की गई है। इसमें मुख्य रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के विद्यार्थी सम्मिलित हैं इसके अलावा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय के भी कुछ विदेशी विद्यार्थियों सम्मिलित हुए हैं। इसमें प्रतिभागी के रूप में अधिक संख्या रखने वाले देशों में श्रीलंका है जहाँ के 20 प्रतिभागी सम्मिलित हुए हैं।

**5. डेटा विश्लेषण-** सभी उत्तरदाताओं द्वारा व्यक्तिगत रूप से उनकी हिंदी में दक्षता को जानने के लिए एक प्रश्न रखा गया था जिसका उत्तर देने के लिए तीन विकल्प दिए गए थे। प्रश्न के रूप में था कि- 'आप हिंदी में अपनी वर्तमान दक्षता के स्तर का आकलन कैसे करते हैं?' इस प्रश्न के संदर्भ में उत्तरदाताओं द्वारा स्वयं की हिंदी दक्षता के अनुसार चयनित विकल्प- आरंभकर्ता, मध्यवर्ती या उन्नत को आधार बनाकर संपूर्ण डेटा को तीन वर्गों (groups) में विभाजित किया गया है। यहाँ नीचे इन तीनों वर्गों और इनके डेटा स्वरूप को देख सकते हैं-

1. आरंभकर्ता वर्ग (Beginner Group)
2. मध्यवर्ती वर्ग (Intermediate Group)
3. उन्नत वर्ग (Advance Group)

संकलित 111 उत्तरदाताओं के संख्यात्मक स्वरूप को यहाँ अलग-अलग देखा जाए तो आरंभकर्ता स्तर में 54, मध्यवर्ती स्तर के 46 और उन्नत स्तर के 11 प्रतिभागी शामिल हुए हैं। जिसे चार्ट (chart) में भी देख सकते हैं।

यहाँ ध्यान देना आवश्यक है कि डेटा का संकलन एक लघु शोध परियोजना हेतु किया गया है जो भारतीय सामाजिक विज्ञान परिषद, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत की गई थी। इस परियोजना के केवल एक पक्ष को लेकर इस शोध-पत्र का लेखन कार्य किया गया है इसलिए यहाँ प्रश्नावली में रखे गए सभी प्रश्नों के बारे में कोई ना ही चर्चा की जा रही है और ना ही संपूर्ण स्वरूप का किसी प्रकार का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।



निर्मित प्रश्नावली के प्रश्न प्रक्षेत्र 3 जिसका शीर्षक था- 'सीखने का अनुभव और भाषाई चुनौतियाँ (Learning Experience & Linguistic Challenges)' के अंतर्गत कुल 10 प्रश्न रखे गए थे जिसमें प्रश्न क्रमांक 3,5 में एक प्रश्न इस प्रकार से रखा गया था कि 'आपको कौन-सी बोली या उच्चारण (accent) समझने में सबसे मुश्किल लगता है? उदाहरण के लिए- भोजपुरी/राजस्थानी/ब्रज आदि।' इस प्रश्न के संदर्भ में कुल 111 प्रतिभागियों द्वारा अलग-अलग उत्तर प्राप्त हुए हैं। प्राप्त उत्तरों के आधार पर इस शोध पत्र का लेखन कार्य किया गया है और विश्लेषण करते हुए परिणामों को प्रस्तुत किया गया है। इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए कोई विकल्प नहीं दिया गया था बल्कि उत्तर को प्रतिभागी द्वारा स्वयं के अनुभवों के आधार पर लिखकर देना था। इस प्रश्न के उत्तर के रूप में एक विशेष बात यह देखने को मिली है कि 111 उत्तरदाताओं में से 51 ऐसे प्रतिभागी हैं जिन्होंने इस प्रश्न के उत्तर में कुछ भी लिखकर नहीं दिया है। जिसका आशय यह है कि इन सभी प्रतिभागियों का किसी हिंदी भाषी व्यक्ति या समुदाय से विशेष संपर्क नहीं हुआ है। इनके अलावा शेष 60 प्रतिभागियों के प्राप्त उत्तरों के बारे में आगे की गई है।

हिंदी भाषा-भाषी समुदाय में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग किया जाता है जिसके कारण व्यक्ति की भाषा पर दूसरी भाषा का प्रभाव किसी-न-किसी रूप में रहता है। इसमें सबसे अधिक अपनी मातृभाषा का प्रभाव देखा जाता है। यही स्थिति भारत में प्रयुक्त होने वाली अन्य क्षेत्रीय भाषाओं वाले समुदाय या व्यक्ति के साथ भी देखते को मिलती है। बराबर संपर्क में रहने वाला व्यक्ति भाषा और बोली के स्तर पर होने वाले ध्वन्यात्मक, शब्दावली आदि के अंतरों को बहुत ही आसानी से समझ जाता है। इसके लिए उसे किसी प्रकार का प्रयास करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है बल्कि व्यक्ति का मस्तिष्क स्वतः ही कर लेता है लेकिन जब कोई दूसरी भाषा को जानने वाले व्यक्ति इस प्रकार के समाज में व्यक्ति के संपर्क में आता है तो फिर उसे ऐसे अंतरों के मिलने पर मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और तब हमें पता चलता है कि व्यक्ति या समाज की भाषा का स्वरूप दूसरी भाषा से मिश्रित होने के कारण समझने में कठिन है। यह स्थिति भौगोलिक स्तर पर केवल भारत में भी देखने को मिल सकती है। कहने का आशय यह है कि यदि कोई मराठी भाषी जिसे हिंदी आती है वह हिंदी में संप्रेषण करने की क्षमता रखता है लेकिन जब उसका संपर्क किसी ऐसे व्यक्ति या भाषा समाज से होता है जिसकी हिंदी अन्य भारतीय बोलियों की मिश्रित स्वरूप वाली है तो वहाँ पर उस मराठी व्यक्ति को भी हिंदी समझना कठिन हो जाएगा क्योंकि मराठी व्यक्ति हिंदी के मानक स्तर को जनता है और वह इसी मानक स्वरूप वाली हिंदी में ही अपने आपको अभिव्यक्त करने में सक्षम होता है या मानक स्वरूप को समझने में दक्ष होता है। इसी प्रकार की स्थिति को इस शोध-पत्र में भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव के रूप में रखा गया है और विश्लेषण हेतु केंद्र में विदेशी विद्यार्थियों को लिया गया है उन्हें किन भारतीय भाषाओं का हिंदी पर प्रभाव होने या मिश्रित स्वरूप होने के कारण समझने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इसे तथ्य के साथ स्पष्ट करने हेतु यहाँ 60 प्रतिभागियों के प्राप्त उत्तरों की व्याख्या प्रस्तुत है-

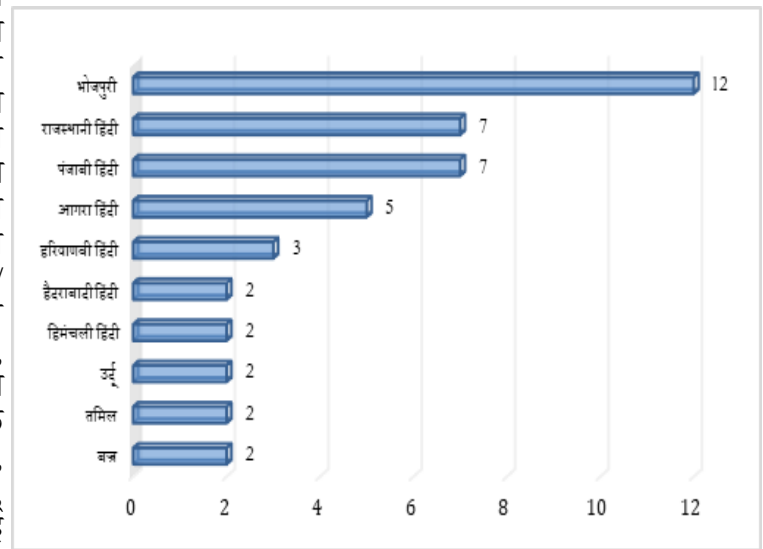
भारत की अन्य क्षेत्रीय बोलियों/भाषाओं के प्रभाव के कारण हिंदी के उच्चारण (accent) को समझना सबसे मुश्किल लगता है इसमें उत्तरदाताओं द्वारा जो चिह्नित किया गया है उनमें से सबसे अधिक 'भोजपुरी' (Bhojपुरी) को कहा है कि किसी हिंदी भाषा के उच्चारण में

भोजपुरी लय (tone) के साथ हिंदी उच्चारण करने में उन्हें समझने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इसके अंतर्गत कुल 12 ऐसे उत्तरदाता हैं जिन्होंने भोजपुरी उच्चारण से प्रभावित हिंदी को समझने में मुश्किल होने की बात कही है। इनके अलावा 7 उत्तरदाताओं ने 'राजस्थानी हिंदी' को कहा है कि इस भाषा के उच्चारण से प्रभावित हिंदी को समझना कठिन होता है। इसके बाद 7 ही ऐसे उत्तरदाता हैं जिन्होंने 'पंजाबी हिंदी' को चिह्नित किया गया है कि इन भाषा के उच्चारण से प्रभावित हिंदी को समझना उन्हें कठिन लगता है। चूंकि परियोजना हेतु डेटा मुख्य रूप से केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में आए विद्यार्थियों से लिया गया है तो यहाँ पर संस्थान के बाहर विद्यार्थियों का बाजार या किसी अन्य संदर्भ में आगरा के लोगों से बात करने की आवश्यकता पड़ती है। आगरा के लोगों द्वारा किसी मानक/शुद्ध हिंदी का प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि यहाँ के हिंदी भाषा-भाषियों पर 'ब्रज' भाषा का प्रभाव है जिसके कारण उनकी हिंदी के शब्द रूप या क्रिया रूप को समझने में कठिनाई होती है इसीलिए कुछ प्रतिभागियों द्वारा हिंदी समझने के मुश्किल होने के संदर्भ में 'आगरा की लोकल हिंदी' भी बताया है। इसे दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि हिंदी के ब्रज मिश्रित भाषा को समझने में भी उन्हें मुश्किल होती है। इसके अंतर्गत 5 ऐसे उत्तरदाता हैं जिन्होंने आगरी में बोली जाने वाली स्थानी हिंदी को भी 'आगरा हिंदी' या 'लोकल हिंदी' के रूप में चिह्नित करते हुए कठिन बताया है।

अध्ययन के दौरान ही विदेशी विद्यार्थी भारत के विभिन्न प्रान्तों में घूमने के लिए जाते हैं। जो विद्यार्थी जहाँ घूमने जाता है वह वहाँ के लोगों के संपर्क में आता है। इस आधार पर स्थान के रूप में कुछ प्रमुख भाषाओं को चिह्नित किया गया है। इसके अंतर्गत 3 प्रतिभागियों द्वारा 'हरियाणवी हिंदी' को समझना कठिन बताया गया है तो 'हैदराबादी हिंदी' के रूप में 2 द्वारा चिह्नित किया गया है। इसी तरह जो विद्यार्थी हिमांचल प्रदेश भ्रमण के लिए गया था उनका संपर्क हिमांचल के लोगों से होने के कारण वहाँ की हिंदी को चिह्नित किया गया है। 'हिमांचली हिंदी' के रूप में भी 2 प्रतिभागियों द्वारा मुश्किल कहा गया है। इन सभी से अलग कुछ ऐसे भी प्रतिभागी हैं जिनका संपर्क दक्षिण भारत में प्रयुक्त होने वाली हिंदी के स्वरूप को चिह्नित किया गया है जिसमें मुख्य रूप से कन्नड़, तमिल और तेलगु को बताया गया है कि इन भाषाओं के उच्चारण प्रभाव वाली हिंदी को भी समझने में बहुत कठिनाई होती है। इसके साथ ही 2 ऐसे प्रतिभागी हैं जिन्होंने 'उर्दू' मिश्रित हिंदी को समझना कठिन कहा है।

यहाँ पर स्वतंत्र रूप से केवल एक-एक भाषा के रूप में चिह्नित किए गए भारत की अन्य क्षेत्रीय बोलियों/भाषाओं को ही प्रस्तुत किया गया है। अधिकता वाले आँकड़े के स्वरूप को बार-चार्ट (bar-chart) में भी देखा जा सकता है। इनके अलावा कुछ प्रतिभागी ऐसे भी हैं जिनके द्वारा एक से अधिक भाषाओं के रूप में दो या तीन भाषाओं के नामों को लिखा गया है कि इनके उच्चारण वाली हिंदी को समझना बहुत कठिन लगता है। इसमें मुख्य रूप से पंजाबी हिंदी-गुजराती हिंदी, बांग्ला-हिंदी, राजस्थानी हिंदी, राजस्थानी हिंदी, हरियाणवी हिंदी, राजस्थानी हिंदी, ब्रज प्रभावी हिंदी हैं इसके अलावा तमिल, मलयालम और तेलगु प्रभावित हिंदी के रूप में बताया गया है।

**6. निष्कर्ष-** निष्कर्ष के रूप में संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा-भाषी समाज में हिंदी के मानक रूप का प्रयोग कम किया जाता है। केवल प्रशासनिक कार्य, शिक्षा जगत और संचार माध्यमों आदि में मानक हिंदी का प्रयोग होता है। दैनिक बोलचाल में मानक हिंदी का प्रयोग कम बल्कि क्षेत्रीय बोलियों या भाषाओं का प्रयोग होता है जिसका परिणाम यह होता है कि उनकी हिंदी में अन्य बोलियों/भाषाओं शामिल हो जाता है अर्थात् उनकी हिंदी का स्वरूप अन्य भाषाओं से मिश्रित वाली हो जाती है जिसे गैर-हिंदी भाषी द्वारा समझने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। ऐसे स्वरूप वाली हिंदी के सही अर्थ समझ पाना या शब्दों का सही प्रयोग या उच्चारण आदि को समझने या अंतर करने के स्तर पर गैर-हिंदी भाषी के लिए एक बहुत ही बड़ी समस्या हो जाती है। यह स्थिति विदेशी विद्यार्थियों के सामने भी आती है क्योंकि उनके पास पहले से जो हिंदी का थोड़ा ज्ञान रहता है वह मानक हिंदी के स्वरूप का होता है। इसलिए जब वे हिंदी सीखने के लिए भारत के संस्थानों में आते हैं तो हिंदी भाषी समाज या अध्यापक जिसकी भाषा पर अन्य भाषाओं का प्रभाव होता है उसे समझना उन्हें बहुत मुश्किल हो जाता है। परियोजना के रूप में संकलित किए गए डेटा के आधार पर संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हिंदी पर अन्य बोलियों/भाषाओं के प्रभाव वाले स्वरूप या उच्चारण को समझने में कठिनाई के रूप में जो प्राप्त हुआ है इनमें मुख्य रूप से भोजपुरी, ब्रज, राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती भाषाएँ हैं जिनका उच्चारण के स्तर पर हिंदी में प्रभाव होने पर उसे समझने में विदेशी विद्यार्थियों को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इनके अलावा स्थान विशेष के रूप में हरियाणा, अलीगढ़, मुंबई, हैदराबाद, हिमांचल प्रदेश के साथ-साथ दक्षिण भारत में प्रयोग की जाने वाली कन्नड़, तमिल और तेलगु प्रभावित हिंदी वाले स्वरूप को भी समझने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।



**7. अभिस्वीकृति (acknowledgment)-** यह शोध-पत्र भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR), नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित लघु शोध परियोजना (वर्ष : 2024-25) के अंतर्गत प्रकाशित किया जा रहा है। यह परियोजना क्रमांक 119/2024-25/ICSSR/RP/MN/OBC के तहत समर्थित है।

### 8. सहायक ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, मुकेश. (2001). *अन्य भाषा शिक्षण*. यूनिवर्सल पब्लिशर्स।
2. चंद्र, जगदीश. (2008). *हिंदी शिक्षण*. मॉडर्न पब्लिकेशन।
3. पाण्डेय, श्रुतिकंत. (2014). *हिंदी भाषा और इसकी शिक्षण विधियाँ: हिंदी भाषा और शिक्षण विधियों की परिचायक*. राज प्रेस।
4. बाछोटिया, हीरालाल. (2006). *हिंदी शिक्षण: संकल्प और प्रयोग*. आर्य प्रकाशन मंडला।
5. बिरला, अनिता., & चौहान, धर्मेन्द्र सिंह. (2023). *अध्ययन-अध्यापन में आधुनिक तकनीक का प्रयोग एवं उपयोगिता*. लक्ष्मी बुक पब्लिकेशन।
6. भाटिया, कैलाशचंद्र. (2001). *आधुनिक भाषा शिक्षण*. तक्षशिला प्रकाशन।
7. मंगल, उमा. (2009). *हिंदी शिक्षण*. आर्य बुक डिपो।
8. मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी हैदराबाद. (2018). *हिंदी भाषा शिक्षण*।